

जयत्यंजनी-गर्भ-अंभोधि-संभूत विधु विबुध-कुल-कैरवानंदकारी ।
केसरी-चारु-लोचन चकोरक-सुखद, लोकगन-शोक-संतापहारी ॥ १ ॥

जयति जय बालकपि केलि-कौतुक उदित-चंडकर-मंडल-ग्रासकर्ता ।
राहु-रवि-शक्र-पवि-गर्व-खर्वीकरण शरण-भयहरण जय भुवन-भर्ता ॥ २ ॥

जयति रणधीर, रघुवीरहित, देवमणि, रुद्र-अवतार, संसार-पाता ।
विप्र-सुर-सिद्ध-मुनि-आशिषाकारवपुष, विमलगुण, बुद्धि-वारिधि-विधाता ॥ ३ ॥

जयति सुग्रीव-ऋक्षादि-रक्षण-निपुण, बालि-बलशालि-बध-मुख्यहेतू ।
जलधि-लंघन सिंह सिंहिका-मद-मथन, रजनिचर-नगर-उत्पात-केतू ॥ ४ ॥

जयति भूनन्दिनी-शोच-मोचन विपिन-दलन घननादवश विंगतशका ।
लूमलीलाऽनल-ज्वालमालाकुलित होलिकाकरण लंकेश-लंका ॥ ५ ॥

जयति सौमित्र रघुनंदनानंदकर, ऋक्ष-कपि-कटक-संघट-विधायी ।
बद्ध-वारिधि-सेतु अमर-मंगल-हेतु, भानुकुलकेतु-रण-विजयदायी ॥ ६ ॥

जयति जय वज्रतनु दशन नख मुख विकट, चंड-भुजदंड तरु-शैल-पानी ।
समर-तैलिक-यंत्र तिल-तमीचर-निकर, पेरि डारे सुभट घालि घानी ॥ ७ ॥

जयति दशकठ-घटकर्ण-वारिद-नाद-कदन-कारन, कालनेमि-हंता ।
अघटघटना-सुघट सुघट-विघटन विकट, भूमि-पाताल-जल-गगन-गंता ॥ ८ ॥

जयति विश्व-विख्यात बानैत-विरुदावली, विदुष बरनत वेद विमल बानी ।
दास तुलसी त्रास शमन सीतारमण संग शोभित राम-राजधानी ॥ ९ ॥